तालीम और दीन की समझ पैदा कराना हमारी ज़िम्मेदारी है

मौलाना जलील अहसन नदवी रह. राहे अमल हिन्दी.

'नोट:- हदीष की रिवायत का खुलासा है.'

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहिम

तिबरानी

रसूलुल्लाहﷺ ने एक दिन खुतबा दिया और उस मै कुछ मुसलमानों की तारीफ फरमाई, फिर फरमाया क्यों ऐसा है की कुछ लोग अपने पडोसियों मै दीनी समझ नहीं पैदा करते और उन्हें शिक्षा नहीं देते, और दीन ना जानने के इबरतनाक नताइज उन्हें नहीं बताते और उन्हें बुरे कामों से नहीं रोकते? और क्यों ऐसा है कुछ लोग अपने पडोसियों से दीन नही सीखते और दीनी समझ नहीं पैदा करते और दीन ना जानने के इबरतनाक नताइज नही मालूम करते? अल्लाह की कसम! लोग अपने पडोसियों को जरूरी शिक्षा दें उन्के अन्दर दीनी समझ पैदा करें, उन्हें नसीहत करें, उन्को अच्छी बातें बताए और उन्को बुरी बातों से रोकें, और लोगों को अपने

पडोसियों से दीन सीखना होगा, दीन की समझ पैदा करनी होगी, और उन्के वअज़ व नसीहत को कुबूल करना होगा वर्ना मै बहुत जल्द उन्हें सज़ा दूंगा. फिर आप मिम्बर से उतर आए और तकरीर खत्म कर दी.

सुनने वालो मै से कुछ लोगों ने कहा ये कौन लोग थे जिन के खिलाफ आपﷺ ने तकरीर फरमाई? दूसरे लोगों ने बताया की आपﷺ का इशारा कबील ए अशअर के लोगों की तरफ था ये लोग दीन की समझ रखते है और उन्के पडोस मै चश्मों पर रहने वाले दीहाती उजड्ड लोग है, जब इस तकरीर की खबर अशअरी लोगों को पहुंची तो वो आपﷺ के पास आए उन्हों ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! आपने अपनी तकरीर मै कुछ लोगों की तारीफ फरमाई और हमारे उपर गुस्सा फरमाया तो हमसे क्या कुसूर हुआ? आपﷺ ने फरमाया लोग अपने पडोसियों को ज़रूर शिक्षा दें, उन्हें नसीहत करें, अच्छी बातों की तलकीन करें और बुरी बातों से रोकें.

इसी तरह लोगों को अपने पडोसियों से दीन सीखना होगा, वअज़ व नसीहत को कुबूल करना होगा, और अपने अन्दर दीनी समझ पैदा करनी होगी, वर्ना मै उन लोगों को बहुत जल्द

दुनिया मै सज़ा दूंग, तो अशअरीन ने कहा ऐ अल्लाह के रसूल! क्या हम दूसरों मै समझ पैदा करें, क्या तालीम व तबलीग भी हमारी ज़िम्मेदारी है? तो आपने फरमाया हां ये भी तुम्हारी ज़िम्मेदारी है तो उन लोगों ने कहा की हम को एक साल की मुहलत दीजिये, चुनाचे आपﷺ ने उन्को एक साल की मुहलत दी, जिस्मे वो अपने पडोसियों के अन्दर दीनी समझ पैदा करें और अहकाम बताएगे इस्के बाद आपﷺ ने सूरह मायदा की आयत की तिलावत फरमाई उस्का तर्जुमा ये है- “बनी इसराइल के कुफ्र इखतियार करने वालों पर लानत की गई दाउद (अल) की जुबान से और ईसा बिन मरयम (अल) की जुबान से और ये लानत इसलिए की गई की उन्हों ने नाफरमानी की राह अपनाई और बराबर अल्लाह के आदेशों को तोडते चले गये ये आपस मै एक दूसरे को बुरी बातों के करने से नहीं रोकते थे, बेशक उन्की ये हरकत बहुत ही बुरी थी”.